पूजन के पूर्व

संयोजन

मुनि समतासागर

कृति : **पूजन के पूर्व** (अर्थ सहित)
संयोजन : मुनि श्री समतासागर जी महाराज
कार्य सहयोग : ऐलक श्री निश्चयसागर जी महाराज
कम्पोजिंग : रीतेश कान्हेड (रीतेश कम्प्यूटर), वाशिम, मो. 9175138937
संस्करण : प्रथम, 1008 प्रतियाँ
प्रकाशक : गुरुवर साहित्य प्रकाशन

पावन प्रसंग

गुरुवर आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के परम प्रभावक शिष्य **वात्सल्यमूर्ति मुनि श्री समतासागर जी महाराज** एवं **ऐलक श्री निश्चयसागर जी महाराज** के धर्म नगरी सिलवानी (रायसेन) में ग्रीष्मकालीन प्रवास में **श्रुतपंचमी** (15 जून 2021) के पावन पर्व पर प्रकाशित।

पुण्यार्जक

सिं. छिदामीलाल जी-श्रीमति कीर्ति जैन
सचिन-रीनम जैन, कु. भव्या, द्रव्या जैन
फैंसी साड़ी शोरूम, सिलवानी (म.प्र.), मो. 9977056786
सौरभ (नितिन)-रुचि जैन, कु. धैर्या, चि. ओजस जैन
जैनम कलेक्शन, तिलक नगर, इंदौर (म.प्र.)
मो. 9425620574

सम्पर्क सूत्र : गोल्डी सिंघई कटनी, मो. 9425152940
: राजीव जैन (लकी बुक) ललितपुर, मो. 9415586450
: विनोद पत्रकार खुरई, मो. 9425452751
: संजय जैन (संजय क्राकरी) विदिशा, मो. 9425640700
: सोनू सिंघई नागपुर, मो. 9423401297
: सुदेश गुडकरी कारंजा, मो. 9850551302
: अनिल जैन, अखिलेश जैन (नन्हीं देवरी) सागर, मो. 9926475075
मुद्रक : भारिल्ल स्क्रीन प्रिंटर्स, विदिशा, मो. 9827256243

मंगलाष्टक

अर्हन्तो भगवन्त इन्द्र-महिताः, सिद्धाश्च सिद्धीश्वराः,
आचार्या जिनशासनोन्नतिकराः, पूज्या उपाध्यायकाः।
श्रीसिद्धान्त-सुपाठकाः मुनिवरा, रत्नत्रयाराधकाः,
पञ्चैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं, कुर्वन्तु मे मङ्गलम् ।।१।।

अन्वयार्थ :- **(इन्द्र-महिताः)** इन्द्रों द्वारा पूजित **(अर्हन्तः भगवन्तः)** अर्हन्त भगवान् **(च)** और **(सिद्धीश्वराः)** सिद्धि (मुक्ति) के स्वामी **(सिद्धाः)** सिद्ध भगवान् **(जिनशासनोन्नतिकराः)** जिनशासन को उन्नत करने वाले **(आचार्याः)** आचार्य परमेष्ठी **(श्री सिद्धान्तसुपाठकाः)** श्री सिद्धान्त को अच्छी तरह से पढ़ाने वाले **(उपाध्यायकाः)** उपाध्याय परमेष्ठी **(रत्नत्रयाराधकाः)** रत्नत्रय के आराधक साधु परमेष्ठी **(एते पूज्या)** ये पूज्य **(पञ्च परमेष्ठिनः)** पाँच परमेष्ठी **(प्रतिदिनं)** प्रतिदिन **(मे मङ्गलम्)** मेरा मङ्गल **(कुर्वन्तु)** करें।

भावार्थ :- इन्द्रों द्वारा पूजित-ऐसे अर्हन्त भगवान्, सिद्धि के स्वामी-ऐसे सिद्ध भगवान्, जिनशासन को उन्नत (प्रचारित-प्रकाशित) करने वाले-ऐसे आचार्य, सिद्धान्त को सुव्यवस्थित पढ़ाने वाले-ऐसे उपाध्याय, रत्नत्रय के आराधक-ऐसे साधु, ये पाँचों परमेष्ठी प्रतिदिन मेरा मङ्गल करें।

श्रीमन्नम्र-सुरासुरेन्द्र-मुकुट-प्रद्योत-रत्नप्रभा-
भास्वत्पाद-नखेन्दवः प्रवचनाऽम्भोधीन्दवः स्थायिनः।
ये सर्वे जिन-सिद्ध-सूर्यनुगतास्ते पाठकाः साधवः,
स्तुत्या योगिजनैश्च पञ्च-गुरवः कुर्वन्तु मे मङ्गलम् ।।२।।

अन्वयार्थ :- **(श्रीमत्)** लक्ष्मी से संयुक्त **(नम्र सुरासुरेन्द्र)** नम्रीभूत देवेन्द्रों और असुरेन्द्रों के **(मुकुट प्रद्योत)** मुकुटों के चमकदार **(रत्नप्रभा भास्वत्)** रत्नों की कान्ति से आभावान् **(येन)** जिनके **(पादनखेन्दवः)** चरणों के नखरूपी चन्द्रमा हैं **(प्रवचनाऽम्भोधी)** जो प्रवचनरूपी सागर को वृद्धिंगत करने के लिए **(इन्दवः स्थायिनः)** स्थायी चन्द्रमा के समान हैं **(योगिजनैः स्तुत्या)** योगीजन जिनकी स्तुति करते हैं **(ये सर्वे)** ये सभी **(जिन सिद्ध)** अर्हन्त, सिद्ध **(सूर्यनुगताः)** आचार्य सहित **(पाठकाः साधवः)** उपाध्याय और साधु जन **(मे मङ्गलम्)** मेरा मङ्गल **(कुर्वन्तु)** करें ।

भावार्थ :- शोभायुक्त और नमस्कार करते हुए देवेन्द्रों व असुरेन्द्रों के मुकुटों के चमकदार रत्नों की कान्ति से जिनके श्री चरणों के नखरूपी चन्द्रमा की ज्योति स्फुरायमान हो रही है। जो प्रवचनरूप सागर की वृद्धि करने के लिए स्थायी चन्द्रमा हैं एवं योगीजन जिनकी स्तुति करते हैं-ऐसे अर्हन्त, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु-ये पाँचों परमेष्ठी मेरा मङ्गल करें ।

सम्यग्दर्शन-बोध-वृत्तममलं रत्नत्रयं पावनं,
मुक्ति-श्री-नगराधिनाथ-जिनपत्युक्तोऽपवर्ग-प्रदः।
धर्मः सूक्ति-सुधा च चैत्यमखिलं चैत्यालयः श्र्यालयः,
प्रोक्तंच त्रिविधं चतुर्विधममी कुर्वन्तु मे मङ्गलम् ।।३।।

अन्वयार्थ :- (अमलम्) निर्मल **(सम्यग्दर्शन)** सम्यग्दर्शन **(बोध-वृत्तम्)** सम्यग्ज्ञान-सम्यक्चारित्ररूप **(रत्नत्रयं पावनं)** पवित्र रत्नत्रय का **(मुक्तिश्री)** मुक्तिरूपी लक्ष्मी के **(नगराधिनाथ)** नगराधिपति **(जिनपति)** जिनेन्द्रदेव ने **(अपवर्गप्रदः)** मोक्ष को देनेवाला **(धर्मः उक्तः)** धर्म कहा है **(सूक्तिसुधा)** सूक्तिसुधा (जिनागम) **(अखिलं चैत्यं)** समस्त जिनप्रतिमा और **(श्रयालयः चैत्यालयः)** लक्ष्मी का आधारभूत जिनमन्दिर **(धर्मः त्रिविधम्)** धर्म तीन प्रकार का **(प्रोक्तं)** कहा है **(च अमी)** और ये **(चतुर्विधं)** चार प्रकार का (धर्म) **(मे मङ्गलं)** मेरा मङ्गल **(कुर्वन्तु)** करें

भावार्थ :- निर्मल सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र यह पवित्र रत्नत्रय है। श्री सम्पन्न मुक्तिनगर के स्वामी भगवान् जिनदेव ने इसे अपवर्ग (मोक्ष) को देनेवाला धर्म कहा है। इस प्रकार जो यह तीन प्रकार का धर्म कहा गया है वह तथा इसके साथ जिनागम, जिनप्रतिमा और जिनालय मिलकर जो चार प्रकार का धर्म कहा गया है वह मेरा मङ्गल करें ।

नाभेयादि-जिनाधिपास्त्रिभुवन-ख्याताश्चतुर्विंशतिः,
श्रीमन्तो भरतेश्वर-प्रभृतयो ये चक्रिणो द्वादश।
ये विष्णु-प्रतिविष्णु-लाङ्गल-धराःसप्तोत्तरा विंशतिः,
त्रैकाल्ये प्रथितास्त्रिषष्टि-पुरुषाः कुर्वन्तु मे मङ्गलम्।।४।।

अन्वयार्थ :- (त्रिभुवनख्याताः) तीनों लोकों में विख्यात **(नाभेयादि)** ऋषभ आदि **(जिनाधिपाः)** जिन स्वामी **(चतुर्विंशतिः)** चौबीस तीर्थंकर

(श्रीमन्तः) लक्ष्मीवान **(यः)** जो **(भरतेश्वरप्रभृतयः)** भरतेश्वर आदि **(द्वादशचक्रिणः)** बारह चक्रवर्ती **(यः विष्णु)** जो नारायण **(प्रतिविष्णु)** प्रतिनारायण **(लाङ्गलधराः)** बलभद्र **(सप्तोत्तरा विंशतिः)** सात अधिक बीस अर्थात् सत्ताईस **(त्रैकाल्ये)** तीनों काल में **(प्रथिताः)** विस्तृत [मान्य] **(त्रिषष्टि पुरुषाः)** त्रेषठ शलाका पुरुष **(मे मङ्गलम्)** मेरा मङ्गल **(कुर्वन्तु)** करें।

भावार्थ :– तीनों लोकों में विख्यात और बाह्य तथा आभ्यन्तर लक्ष्मी सम्पन्न ऋषभनाथ भगवान् आदि चौबीस तीर्थंकर, श्रीमान् भरतेश्वर आदि बारह चक्रवर्ती, नव नारायण, नव प्रतिनारायण और नव बलभद्र ये त्रेषठ शलाका पुरुष मेरा मङ्गल करें ।

ये सर्वौषध–ऋद्धयः सुतपसो वृद्धिंगता पञ्च ये,
ये चाष्टाङ्ग–महानिमित्त–कुशलाश्चाष्टौ विधाश्चारणाः।
पञ्च–ज्ञानधरास्त्रयोऽपि बलिनो ये बुद्धि–ऋद्धीश्वराः,
सप्तैते सकलार्चिता गणभृताः कुर्वन्तु मे मङ्गलम्।।५।।

अन्वयार्थ :– (यः सुतपसः) जो अच्छे तप से **(वृद्धिंगताः)** वृद्धि प्राप्त **(पञ्च)** पाँच **(सर्वौषध–ऋद्धयः)** सर्वौषधि ऋद्धियों के स्वामी **(च यः अष्टाङ्ग)** और जो अष्टाङ्ग **(महानिमित्तकुशलाः)** महानिमित्तों में कुशल **(च अष्टौ)** और आठ **(विधाश्चारणाः)** चारण ऋद्धियों के धारक **(पञ्चज्ञानधराः)** पाँच प्रकार के ज्ञानधारी **(त्रयः अपि)** तीन प्रकार के **(बलिनः)** बल से युक्त **(ऐते सप्त)** ये सात **(यः बुद्धिऋद्धीश्वराः)** जो बुद्धि ऋद्धीश्वर **(सकलार्चिता गणभृताः)** सभी के द्वारा पूजित श्रेष्ठ गणधर **(मे मङ्गलम्)** मेरा मङ्गल **(कुर्वन्तु)** करें।

भावार्थ :– जो उत्तम तप से वृद्धि को प्राप्त हुई पाँच सर्वौषधि ऋद्धियों के स्वामी हैं, अष्टाङ्ग महानिमित्तों में कुशल हैं, आठ चारण ऋद्धियों के धारी हैं, पाँच प्रकार के ज्ञान से सम्पन्न हैं, तीन प्रकार के बल से युक्त हैं और बुद्धि आदि सात प्रकार की ऋद्धियों के अधिपति हैं; वे जगत्पूज्य गणधर (मुनिवर) मेरा मङ्गल करें।

कैलासे वृषभस्य निर्वृत्तिमही वीरस्य पावापुरे,
चम्पायां वसुपूज्य–सज्जिनपतेः सम्मेद–शैलेऽर्हताम्।
शेषाणामपि चोर्जयन्त–शिखरे नेमीश्वरस्यार्हतो,
निर्वाणावनयः प्रसिद्ध–विभवाः कुर्वन्तु मे मङ्गलम्।।६।।

अन्वयार्थ :- **(वृषभस्य निर्वृत्तिमही)** ऋषभदेव की निर्वाण भूमि **(कैलासे)** कैलास पर्वत पर **(वीरस्य)** महावीर स्वामी की **(पावापुरे)** पावापुर में है **(वसुपूज्य)** वासुपूज्य की **(चम्पायाम्)** चम्पापुर में **(अर्हतः)** अर्हन्त **(नेमीश्वरस्य)** नेमीनाथ स्वामी की **(ऊर्जयन्त शिखरे)** ऊर्जयन्त पर्वत पर **(च)** और **(शेषाणामपि अर्हताम्)** शेष पूज्य तीर्थंकरों की **(सम्मेदशैले)** सम्मेद शिखर पर **(प्रसिद्धविभवाः)** प्रसिद्ध है वैभव जिनका **(निर्वाणावनयः)** वे निर्वाण भूमियाँ **(मे मङ्गलम्)** मेरा मङ्गल **(कुर्वन्तु)** करें।

भावार्थ :- भगवान् ऋषभदेव की कैलास पर्वत, महावीर स्वामी की पावापुर, वासुपूज्य स्वामी की चम्पापुर, नेमीनाथ की ऊर्जयन्त (गिरनार) शिखर और शेष बीस तीर्थंकर जिन भगवन्तों की निर्वाण भूमि सम्मेद शिखर है। वैभव सम्पन्न वे सभी निर्वाण भूमियाँ मेरा कल्याण करें।

ज्योतिर्व्यन्तर भावनामरगृहे मेरौ कुलाद्रौ स्थिताः,
जम्बू-शाल्मलि-चैत्य-शाखिषु तथा वक्षार-रूप्याद्रिषु।
इष्वाकार-गिरौ च कुण्डल-नगे द्वीपे च नन्दीश्वरे,
शैले ये मनुजोत्तरे जिन-गृहाः कुर्वन्तु मे मङ्गलम् ।।७।।

अन्वयार्थ :- **(ज्योतिः व्यन्तर)** ज्योतिषी, व्यन्तर **(भावनामर)** भवनवासी और वैमानिकों के **(गृहे)** निवास स्थान में **(मेरौ कुलाद्रौ स्थिताः)** मेरुओं में, कुलाचलों में स्थित **(जम्बू)** जम्बू वृक्षों **(शाल्मलि)** शाल्मलि वृक्षों **(चैत्य शाखिषु)** चैत्य वृक्षों की शाखाओं में **(तथा वक्षार)** तथा वक्षारगिरि **(रूप्याद्रिषु)** विजयार्धगिरि **(इष्वाकार)** इष्वाकार पर्वत **(कुण्डलनगे)** कुण्डल पर्वत **(च नन्दीश्वरे द्वीपे)** और नन्दीश्वर द्वीप में **(यः मनुजोत्तरे शैले)** जो मानुषोत्तर पर्वत पर **(जिनगृहाः)** जिन चैत्यालय हैं, वे **(मे मङ्गलम्)** मेरा मङ्गल **(कुर्वन्तु)** करें।

भावार्थ :- ज्योतिषी, व्यन्तर, भवनवासी और वैमानिकों के आवासों के, मेरुओं, कुलाचलों, जम्बूवृक्षों और शाल्मलि वृक्षों, वक्षारों, विजयार्ध पर्वतों, इष्वाकार पर्वतों, कुण्डल पर्वत, नन्दीश्वर द्वीप और मानुषोत्तर पर्वत (तथा रुचिकवर पर्वत) के सभी अकृत्रिम जिन चैत्यालय मेरा मङ्गल करें।

यो गर्भावतरोत्सवो भगवतां जन्माभिषेकोत्सवो,
यो जातः परिनिष्क्रमेण विभवो यः केवलज्ञानभाक्।
यः कैवल्यपुर-प्रवेश-महिमा सम्पादितः स्वर्गिभिः,
कल्याणानि च तानि पञ्च सततं कुर्वन्तु मे मङ्गलम् ।।८।।

अन्वयार्थ :- (यः भगवताम्) जो भगवानों के **(गर्भावतरोत्सवः)** गर्भकल्याणक उत्सव **(जन्माभिषेकोत्सवः)** जन्मकल्याणक उत्सव **(परिनिष्क्रमेण)** तपकल्याणक उत्सव **(केवलज्ञानभाक्)** केवलज्ञानकल्याणक महोत्सव **(च)** और **(यःकैवल्यपुर)** जो कैवल्यपुर **(प्रवेशमहिमा)** प्रवेश की महिमा अर्थात् निर्वाण कल्याणक **(स्वर्गिभिः)** देवों द्वारा **(सम्पादितः जातः)** सम्पन्न किये गये **(तानि पञ्च)** वे पाँचों **(कल्याणानि)** कल्याणक **(मे मङ्गलम्)** मेरा मङ्गल **(सततम् कुर्वन्तु)** हमेशा करें।

भावार्थ :- देवों ने समस्त तीर्थंकरों के जो गर्भ, जन्म, दीक्षा, केवलज्ञान और निर्वाणरूप पंचकल्याणक सम्पन्न किये, वे पंचकल्याणक मेरा मङ्गल करें ।

इत्थं श्रीजिनमङ्गलाष्टकमिदं सौभाग्य-सम्पत्प्रदं,
कल्याणेषु महोत्सवेषु सुधियस्तीर्थंकराणामुषः ।
ये श्रृण्वन्ति पठन्ति तैश्च सुजनैर्धर्मार्थ-कामान्विता,
लक्ष्मीराश्रयते व्यपायरहिता निर्वाणलक्ष्मीरपि ।।९।।

अन्वयार्थ :- (इत्थम्) इस प्रकार **(श्री जिनमङ्गलाष्टकम्)** श्री जिन मङ्गलाष्टक को **(सौभाग्यसम्पत्प्रदम्)** सौभाग्यरूप सम्पत्ति के प्रदाता **(सुधियः तीर्थंकराणाम्)** सुधी तीर्थंकरों के **(कल्याणेषु महोत्सवेषु)** कल्याणक महोत्सवों में और **(उषः)** प्रातःकाल **(यः शृण्वन्ति च पठन्ति)** जो सुनते और पढ़ते हैं **(तैः सुजनैः)** उन उन सज्जनों के द्वारा **(धर्मार्थ-कामान्विता)** धर्म, अर्थ और काम से सहित **(लक्ष्मीः आश्रयते)** लक्ष्मी प्राप्त की जाती है और **(व्यपायरहिता)** विनाशरहित अर्थात् अविनश्वर **(निर्वाणलक्ष्मीः)** मोक्षलक्ष्मी **(अपि आश्रयते)** भी प्राप्त करते हैं।

भावार्थ :- सौभाग्य सम्पत्ति को प्रदान करने वाले इस श्री जिनेन्द्र मङ्गलाष्टक को जो सुधी तीर्थंकरों के पंचकल्याणक महोत्सवों के अवसर पर तथा प्रातःकाल में भावपूर्वक सुनते और पढ़ते हैं, वे सज्जन धर्म, अर्थ और काम से समन्वित लक्ष्मी के आश्रय बनते हैं तथा अन्त में अविनश्वर मोक्षलक्ष्मी को भी प्राप्त करते हैं।

❑❑

अभिषेक–पाठ

(आचार्य श्री माघनन्दि)

श्रीमन्नतामरशिरस्तट - रत्न - दीप्ति -
तोयावभासि - चरणाम्बुज - युग्ममीशम् ।
अर्हन्तमुन्नत - पद - प्रदमाभिनम्य,
तन्मूर्तिषूद्यदभिषेक - विधिं करिष्ये ।।१।।

अन्वयार्थ - (श्रीमत्–नत–अमर–शिर:–तट–रत्न–दीप्ति–तोय–अवभासि–चरण–अम्बुज–युग्मम्) शोभायमान और नम्रीभूत देवताओं के मस्तकरूपी तट पर स्थित रत्नों की कान्तिरूपी जल में सुशोभित हैं जिनके चरणकमलों का युगल **(ईशम्)** जो देवाधिदेव हैं **(उन्नत–पद–प्रदम्)** जो उत्कृष्ट पद को देने वाले हैं ऐसे **(अर्हन्तम्)** अर्हन्त भगवान को **(अभिनम्य)** सम्यक् प्रकार से नमस्कार करके **(तत्–मूर्तिषु)** उनकी प्रतिमाओं पर **(उद्यत्–अभिषेक विधिम्)** अभिषेक की विधि को तत्पर होकर **(करिष्ये)** करूँगा अर्थात् अब मैं अभिषेक की विधि को प्रारम्भ करता हूँ।

अथ पौर्वाह्णिकदेव - वन्दनायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्मक्षयार्थं, भावपूजा - वन्दनास्तव - समेतं श्रीपञ्चमहागुरुभक्तिपुरस्सरं कायोत्सर्गं कुर्वेऽहम् ।।

अन्वयार्थ - (अथ) अब **(अहम्)** मैं **(पौर्वाह्णिक देव–वन्दनायां)** प्रात:कालीन देववन्दना के उपक्रम में **(पूर्वाचार्यानुक्रमेण)** पूर्व आचार्यों के अनुसार **(सकलकर्मक्षयार्थं)** सम्पूर्ण कर्मों का क्षय करने के लिए **(भावपूजा–वन्दनास्तव–समेतं)** भावपूजा, वन्दना और स्तव सहित **(श्रीपञ्चमहागुरु–भक्तिपुरस्सरं)** श्री पञ्च परमेष्ठियों की भक्तिपूर्वक **(कायोत्सर्गं)** कायोत्सर्ग **(कुर्वे)** करता हूँ । (कायोत्सर्ग करें)

या: कृत्रिमास्तदितरा: प्रतिमा: जिनस्य,
संस्नापयन्ति पुरूहूत - मुखादयस्ता: ।

सद्भावलब्धि – समयादि – निमित्तयोगात्,
तत्रैवमुज्ज्वलधिया कुसुमं क्षिपामि ।।२।।

अन्वयार्थ – (पुरूहूतमुखादयः) इन्द्रादि देव **(जिनस्य)** जिनेन्द्र भगवान् की **(याः कृत्रिमाः)** जिन कृत्रिम **(तत् इतराः प्रतिमाः)** तथा इससे भिन्न अर्थात् अकृत्रिम प्रतिमाओं का **(संस्नापयन्ति)** अभिषेक करते हैं **(सद्भावलब्धि-समयादि-निमित्तयोगात्)** शुद्ध भावों की प्राप्ति एवं अनुकूल समय आदि निमित्तों के योग से **(उज्ज्वलधिया)** शुद्ध बुद्धि से **(तत्र)** उन प्रतिमाओं के समक्ष/उस अभिषेक विधि में **(एवं)** इस प्रकार **(कुसुमं)** पुष्पाञ्जलि **(क्षिपामि)** क्षेपण करता हूँ ।

श्रीपीठक्लृप्ते विशदाक्षतोघैः, श्रीप्रस्तरे पूर्ण शशांक – कल्पे।
श्रीवर्तके चन्द्रमसीतिवार्ता, सत्यापयन्तीं श्रियमा – लिखामि ।।३।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकार लेखनं करोमि ।

अन्वयार्थ – (श्रीपीठक्लृप्ते) शोभायमान चौके पर **(विशद-अक्षत-ओघैः)** पवित्र अक्षतों के समूह से **(श्रीवर्तके चन्द्रमसीतिवार्तां)** शोभा से सम्पन्न चन्द्रमा में लिखी हुई श्री की समानता को **(सत्यापयन्तीं)** प्रकट करती हुई **(पूर्णशशांक-कल्पे)** पूर्ण चन्द्रमा के तुल्य **(श्रीप्रस्तरे)** शोभायमान शिला पर **(श्रियम् अलिखामि)** श्री लिखता हूँ।

(इस प्रकार चन्दन से श्रीकार लेखन करें)

कनकादि – निभं कम्रं पावनं पुण्यकारणम् ।
स्थापयामि परं पीठं जिनस्नपनाय भक्तितः ।।४।।
ॐ ह्रीं श्री पीठस्थापनं करोमि ।

अन्वयार्थ – (कनकादि – निभं) सोने आदि के समान **(कम्रं)** सुन्दर **(पावनं)** पवित्र **(पुण्यकारणम्)** पुण्य के कारणभूत **(परं पीठं)** उत्कृष्ट सिंहासन को **(भक्तितः)** भक्ति से **(जिनस्नपनाय)** भगवान् जिनेन्द्र का अभिषेक करने के लिए **(स्थापयामि)** मैं स्थापना करता हूँ ।

(अभिषेक की थाली में सिंहासन स्थापित करें।)

भृङ्गार – चामर – सुदर्पण – पीठ – कुम्भ–
ताल – ध्वजातप – निवारक – भूषिताग्रे ।
वर्धस्व नन्द जय – पाठपदावलीभिः,
सिंहासने जिन! भवन्तमहं श्रयामि ।।५।।

अन्वयार्थ – (वर्धस्व) वृद्धि को प्राप्त हो **(नन्द)** समृद्धिमान हो **(जय)** जयवन्त हो [इत्यादि] **(पाठ–पद–आवलीभिः)** मंगल पाठ के समूह के साथ **(जिन!)** हे जिनेन्द्रदेव! **(अहं)** मैं **(भवन्तम्)** आपको **(भृंङ्गार)** झारी **(चामर)** चाँमर **(सुदर्पण)** सुन्दर दर्पण **(पीठ)** श्रेष्ठ आसन **(कुम्भ)** कलश **(ताल)** व्यजन अर्थात् पंखा और **(ध्वज)** ध्वजा से **(सिंहासने)** सिंहासन पर [स्थापित कर] **(श्रयामि)** सेवा करता हूँ ।

वृषभादि – सुवीरान्तान् जन्माप्तौ जिष्णुचर्चितान्।
स्थापयाम्यभिषेकाय भक्त्या पीठे महोत्सवम् ।।६।।

ॐ ह्रीं श्रीं धर्मतीर्थाधिनाथ! भगवन्निह पाण्डुक शिलापीठे सिंहासने तिष्ठ तिष्ठ

अन्वयार्थ – (जम्माप्तौ) जन्म कल्याणक के समय **(जिष्णुचर्चितान)** इन्द्रादि के द्वारा पूजित **(वृषभादि–सुवीरान्तान्)** वृषभादि महावीरान्त जिनेन्द्र भगवन्तों को **(अभिषेकाय)** अभिषेक करने के लिए (मैं) **(भक्त्या)** भक्तिपूर्वक **(पीठे)** सिंहासन पर **(स्थापयामि)** विराजमान करता हूँ **(महोत्सवं)** अहो यह महान् उत्सव है ।

(जिनप्रतिमा को सिंहासन पर विराजमान करें)

शातकुम्भीय – कुम्भौघान् क्षीराब्धेस्तोयपूरितान् ।
स्थापयामि जिनस्नान – चन्दनादि – सुचर्चितान् ।।८।।

ॐ ह्रीं चतुःकोणेषु चतुःकलशस्थापनं करोमि।

अन्वयार्थ – (जिनस्नान–चन्दनादि–सुचर्चितान्) मैं जिनेन्द्र भगवान के अभिषेक में चन्दनादि से सुशोभित **(क्षीराब्धे)** क्षीरसागर के **(तोयपूरितान्)** जल से भरे हुए **(शातकुम्भीय–कुम्भ औघान्)** स्वर्ण से निर्मित कलशों के समूह को **(स्थापयामि)** स्थापित करता हूँ।

(चारों कोनों में चार कलश स्थापित करें)

आनन्द - निर्भर - सुर - प्रमदादि - गानैर् -
वादित्र - पूर - जय - शब्द - कलप्रशस्तैः।
उद्गीयमान - जगतीपति - कीर्तिमेनां,
पीठस्थलीं वसु - विधार्चनयोल्लसामि ।।९।।

अन्वयार्थ - (वादित्र-पूर-जय-शब्द-कलप्रशस्तैः) वाद्य-समूह एवं जय-जय की मधुर ध्वनि से सुशोभित **(आनन्द-निर्भर-सुर-प्रमदादि-गानैः)** आनंद से भरी देवांगनाओं आदि के गानों से **(उद्गीयमान-जगतीपति-कीर्तिं)** जहाँ जिनेन्द्र देव की कीर्ति का गान हो रहा है **(एनां)** ऐसी-इस **(पीठस्थलीं)** पीठस्थली को **(वसु-विध-अर्चनया)** मैं अष्टविध पूजा से **(उल्लसामि)** सुशोभित करता हूँ।

ॐ ह्रीं स्नपनपीठस्थिताय जिनायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

(विराजमान की गई जिनप्रतिमा को अर्घ्य अर्पित करें)

कर्म - प्रबन्ध - निगडैरपि हीनताप्तं,
ज्ञात्वापि भक्तिवशतः परमादिदेवम् ।
त्वां स्वीयकल्मषगणोन्मथनाय देव !
शुद्धोदकैरभिनयामि महाभिषेकम् ।।१०।।

अन्वयार्थ - (देव!) हे देव **(कर्म-प्रबन्ध-निगडैः अपि)** आप यद्यपि कर्म प्रबन्ध रूप बेड़ियों से **(हीनताप्तं)** हीनता को प्राप्त हैं **(परमादि-देवं)** तथा श्रेष्ठतम देव हैं **(ज्ञात्वापि)** यह जानकर भी **(स्वीय)** स्वयं के **(कल्मष)** पाप **(गणोन्मथनाय)** समूह को नष्ट करने के लिए **(भक्तिवशतः)** भक्ति के वशीभूत हो **(शुद्धोदकैः)** शुद्ध जल से **(त्वां)** आपका **(महाभिषेकम्)** महाभिषेक **(अभिनयामि)** करता हूँ।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं झ्वीं झ्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतरजलेन जिनमभिषेचयामीति स्वाहा ।

(यह मंत्र पढ़कर अभिषेक करें)

तीर्थोत्तम – भवैनीरैः, क्षीर – वारिधि – रूपकैः ।
स्नपयामि सुजन्माप्तान्, जिनान् सर्वार्थसिद्धिदान् ।।११।।
ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्तान् जलेन स्नपयामीति स्वाहा ।

अन्वयार्थ – (तीर्थोत्तम–भवैः) उत्तम तीर्थस्थानों में समुत्पन्न **(क्षीर–वारिधि–रूपकैः नीरैः)** क्षीरसागर के जल के तुल्य जल से **(सुजन्माप्तान्)** उत्तम जन्म को प्राप्त **(सर्वार्थसिद्धिदान्)** सर्वार्थसिद्धिदायक **(जिनान्)** जिनेन्द्र भगवन्तों का **(स्नपयामि)** मैं अभिषेक करता हूँ ।

सकलभुवननाथं तं जिनेन्द्रं सुरेन्द्रै –
रभिषवविधिमाप्तं स्नातकं स्नापयामः।
यदभिषवन – वारां बिन्दुरेकोऽपि नृणां,
प्रभवति हि विधातुं भुक्तिसन्मुक्तिलक्ष्मीम् ।।१२।।

अन्वयार्थ – (यदभिषवन – वारां) जिनके अभिषेक सम्बन्धी जल की **(एकः बिन्दुः अपि)** एक बूँद भी **(नृणां)** मनुष्यों को **(भुक्तिसन्मुक्तिलक्ष्मीम्)** भुक्ति और मुक्तिरूपी लक्ष्मी को **(विधातुं)** प्राप्त कराने में **(हि)** निश्चय से **(प्रभवति)** समर्थ है **(सुरेन्द्रैः)** इन्द्रों के द्वारा **(अभिषवविधिं)** अभिषेक की विधि को **(आप्तं)** प्राप्त हुए **(सकलभुवननाथं)** तीनों लोक के नाथ **(तं)** उन **(स्नातकं जिनेन्द्रं)** अर्हन्त भगवान् का **(स्नापयामः)** हम अभिषेक करते हैं।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं इवीं इवीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं हं झं क्ष्वीं क्ष्वीं हं सः झं वं हः यः सः क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षैं क्षों क्षौं क्षं क्षः क्ष्वीं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रों ह्रौं ह्रं ह्रः द्रां द्रीं नमोऽर्हते भगवते श्रीमते ठः ठः इति बृहच्छान्ति–मन्त्रेणाभिषेकं करोमि ।

(उपर्युक्त मंत्र पढ़कर, चारों कोनों पर रखे हुए चार कलशों से अखण्ड धारा देते हुए श्री जिनेन्द्रदेव का अभिषेक करें)

पानीयचन्दन – सदक्षत – पुष्प – पुञ्ज –
नैवेद्य – दीपक – सुधूप – फल – व्रजेन ।

कर्माष्टकक्रथनवीरमनन्तशक्तिं –
सम्पूजयामि महसा महसां निधानम् ।।१३।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा। (अर्घ्य अर्पित करें)

अन्वयार्थ – (कर्माष्टकक्रथनवीरं) जो आठ कर्मों के नाश करने में शूरवीर हैं **(अनन्तशक्तिं)** अनन्त शक्ति से सहित हैं **(महसां)** आत्मतेज के **(निधानम्)** भण्डार हैं **(महसा)** [उन जिनेन्द्र भगवान् की मैं] बड़े उत्साह से **(पानीय)** जल **(चन्दन)** चन्दन **(सदक्षत)** अक्षत **(पुष्प पुञ्ज)** पुष्प-पुञ्ज **(नैवेद्य)** नैवेद्य **(दीपक)** दीपक **(सुधूप)** धूप **(फल व्रजेन)** फलों के समूह से **(सम्पूजयामि)** भलीभाँति पूजा करता हूँ।

हे तीर्थपा निज–यशो–धवली–कृताशाः,
सिद्धौषधाश्च भवदुःख – महागदानाम् ।
सद्भव्यहृज्जनित – पङ्क–कबन्ध–कल्पाः,
यूयं जिनाः सतत–शान्तिकरा भवन्तु ।।१४।।

(यह पढ़कर शान्ति के लिये पुष्पांजलिं छोड़ें)

अन्वयार्थ – (हे तीर्थपा) जो तीर्थ अर्थात् धर्माम्नाय के रक्षक हैं **(निज–यशो–धवली–कृताशाः)** जिन्होंने अपने यश से दिशाओं को धवल कर दिया है **(भवदुःख–महागदानाम्)** जो सांसारिक दुःखरूपी महारोगों के **(सिद्धौषधाः)** अचूक औषध स्वरूप हैं **(च)** और **(सद्भव्यहृज्जनित – पङ्क–कबन्ध–कल्पाः)** उत्तम भव्य जीवों के मन में उत्पन्न पापरूपी कीचड़ को धोने के लिए जल के तुल्य हैं **(यूयं जिनाः)** ऐसे आप जिनेन्द्र भगवन्त **(सतत–शान्तिकरा भवन्तु)** सदा शान्ति के करने वाले होवें।

(यह पढ़कर शान्ति के लिए पुष्पांजलि छोड़ें)

नत्वा मुहुर्निज – करैरमृतोपमेयैः,
स्वच्छैर्जिनेन्द्र! तव चन्द्र – करावदातैः ।
शुद्धांशुकेन विमलेन नितान्तरम्ये,
देहे स्थितान् जलकणान् परिमार्जयामि ।।१५।।

ॐ ह्रीं अमलांशुकेन जिनबिम्बपरिमार्जनं करोमि ।

(वस्त्र से जिन प्रतिमा का मार्जन करें)

अन्वयार्थ – (जिनेन्द्र) हे जिनेन्द्र **(मुहु: नत्वा)** मैं बार-बार नमस्कार कर **(चन्द्र-करावदातै:)** अमृततुल्य **(निजकरै:)** अपने हाथों से **(नितान्तरम्ये)** अत्यन्त रमणीय **(देहेस्थितान्)** आपके शरीर पर स्थित **(जलकणान्)** जल की बूँदों को **(विमलेन)** निर्मल **(शुद्धांशुकेन)** शुद्ध वस्त्र से **(परिमार्जयामि)** पोंछता हूँ ।

स्नानं विधाय भवतोऽष्टसहस्रनाम्ना –
मुच्चारणेन मनसो वचसो विशुद्धिम् ।
जिघृक्षुरिष्टिमिन तेऽष्ट-तयीं विधातुं,
सिंहासने विधिवदत्र निवेशयामि ।।१६।।

ॐ ह्रीं श्रीसिंहासनपीठे जिनबिम्बं स्थापयामि ।

(यह मन्त्र पढ़कर प्रतिमा जी को सिंहासन पर विराजमान करें)

अन्वयार्थ – (इन) हे स्वामिन् **(स्नानं विधाय)** अभिषेक कर **(भवत:)** आपके **(अष्टसहस्रनाम्नाम्)** एक हजार आठ नामों के **(उच्चारणेन)** उच्चारण द्वारा **(मनस:)** मन **(वचस:)** और वचन की **(विशुद्धिम्)** विशुद्धता को और अपने **(इष्टं)** इष्ट को **(जिघृक्षु:)** ग्रहण करने की इच्छा करता हुआ **(ते)** मैं आपकी पूजा **(अष्टतयीं इष्टम् विधातुं)** अष्टविध पूजा करने के लिए **(विधिवत्)** विधिपूर्वक **(अत्र)** यहाँ **(सिंहासने)** सिंहासन पर **(निवेशयामि)** विराजमान करता हूँ ।

जलगन्धाक्षतै: पुष्पैश्चरुदीपसूधूपकै: ।
फलैरर्घैर्जिनमर्चेज्जन्म – दु:खापहानये ।।१७।।

अन्वयार्थ – (जन्म-दु:खापहानये) संसार सम्बन्धी दु:खों को नष्ट करने के लिए **(जलगन्धाक्षतै:)** जल, चन्दन, अक्षत से **(पुष्पै:)** फूल **(चरुदीप-सूधूपकै:)** नैवेद्य, दीप, सूधुप **(फलै:)** फल **(अर्घै:)** और अर्घ के द्वारा **(जिनम्)** जिनेन्द्र भगवान की **(अर्चेत्)** पूजा करना चाहिए / पूजा करता हूँ।

ॐ ह्रीं श्रीपीठस्थितजिनाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा। (अर्घ्य अर्पित करें)

बृहत् शान्तिधारा

(**ॐ**) प्रणवध्रुव ब्रह्मबीज (**ह्रीं**) कल्याण बीज (**श्रीं**) कीर्ति बीज (**क्लीं**) लक्ष्मी प्राप्ति बीज (**ऐं**) वाग्भवबीज (**अर्हं**) मंगल बीज (**वं**) द्रवण बीज (**मं**) सिद्धि (**हं**) गगन बीज (**सं**) शोधन बीज (**तं**) कालुष्य नाशक (**पं**) जल बीज (**वं वं**) द्रवण बीज (**मं मं**) सिद्धि दायक (**हं हं**) गगन बीज (**सं सं**) पौष्टिक कार्य बीज (**तं तं**) कालुष्य नाशक (**पं पं**) जल बीज (**झं झं**) शक्ति बीज (**झ्वीं झ्वीं**) अमृत बीज (**क्ष्वीं क्ष्वीं**) विषापहार बीज (**द्रां द्रां**) पञ्चवाणी (**द्रीं द्रीं**) पद्मबीज (**द्रावय द्रावय**) अनुसरण करो, अनुसरण करो (**नमोऽर्हते भगवते श्रीमते**) श्रीमान् अर्हन्त भगवान् को नमस्कार हो (**ॐ**) प्रणव ध्रुव, ब्रह्मबीज, तेजोबीज (**ह्रीं**) कल्याण वाचक (**क्रों**) अंकुश बीज (**मम पापं**) मेरे पापों को (**खण्डय खण्डय**) खण्ड-खण्ड करो (**जहि जहि**) छोड़ो छोड़ो (**दह दह**) दहन करो दहन करो (**पच पच**) पकाओ पकाओ या भस्म करो भस्म करो (**पाचय पाचय**) पकवाओ पकवाओ (**ॐ नमो अर्हन्**) ॐ प्रणव ध्रुव बीज ब्रह्मबीज तेजोबीज (**नमः**) शोधन बीज (**अर्हन् झं**) शक्ति बीज (**झ्वीं झ्वीं**) अमृत बीज; विषापहार बीज (**हं**) गगन बीज (**सं**) शोधन बीज (**झं**) शक्ति बीज (**वं**) द्रवण बीज (**ह्रः**) विघ्नविनाशक (**यः**) विसर्जन बीज (**सः**) विषापहार बीज (**पः हः**) उच्चारण वाचक (**क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षैं क्षों क्षौं क्षं क्षः**) रक्षा बीज, सर्व कल्याणक या सर्वविशुद्धि बीज (**क्ष्वीं**) मंगल व सुख बीज (**ह्रां ह्रीं ह्रू ह्रौं ह्रः**) सर्वशान्ति मांगल्य कल्याण, विघ्नविनाशक, सिद्धिदायक (**ह्रों**) महाशक्ति वाचक (**ह्रं**) ज्ञानबीज (**द्रां द्रीं**) पञ्चवाणी (**द्रावय द्रावय**) अनुसरण करो अनुसरण करो (**नमोऽर्हते भगवते श्रीमते नमो**) शोधन बीज श्री से युक्त अर्हन्त भगवान् को नमस्कार (**ठः ठः**) चन्द्रबीज (**अस्माकं**) हम सबका [धारा करने वाले का नाम उच्चारण] (**श्रीरस्तु**) लक्ष्मीवान होवें (**वृद्धिरस्तु**) विकास होवे (**तुष्टिरस्तु**) संतोष होवे (**पुष्टिरस्तु**) संवर्धन होवे (**शान्तिरस्तु**) शान्ति होवे (**कान्तिरस्तु**) कान्ति होवे (**कल्याणमस्तु**) कल्याण होवे, मंगलप्रद हो (**स्वाहा**) शान्ति और हवन वाचक ।

(**एवं**) इस प्रकार (**अस्माकं**) हम सबकी (**कार्य सिद्ध्यर्थं सर्वविघ्न-निवारणार्थं**) कार्यसिद्धि के लिये तथा सर्वविघ्नों को दूर करने के लिये

(**श्रीमद्भगवदर्हत्सर्वज्ञ–परमेष्ठि परम पवित्राय नमो नमः**) श्री युक्त / प्रतिष्ठित/भगवान् अर्हन्त सर्वज्ञ परमेष्ठी परम/श्रेष्ठ पवित्रता की प्राप्ति के लिये नमस्कार हो–नमस्कार हो (**अस्माकं**) हम सबकी (**श्रीशान्तिभट्टारक पादपद्म–प्रसादात् सद्धर्म श्रीबलायुरोग्य–ऐश्वर्याभिवृद्धिरस्तु**) श्री शान्ति के करने वाले ऐसे श्रद्धेय के चरणकमल के प्रसाद से समीचीन धर्म, बल, आयु, निरोग, ऐश्वर्य की वृद्धि होवे (**सद्धर्म–स्वशिष्य–परशिष्यवर्गाः प्रसीदन्तु नः**) हम सब, समीचीन धर्म तथा अपने शिष्य समूह और दूसरे के शिष्य समूह प्रसन्न होवे।

(**ॐ वृषभादयः श्रीवर्द्धमानपर्यन्ताश्च चतुर्विंशत्यर्हन्तो भगवन्तः सर्वज्ञाः परममांगलनामधेया**) श्री वृषभनाथ से वर्द्धमान पर्यन्त चौबीस अर्हन्त भगवान्, सर्वज्ञ परम मंगल नाम के (**अस्माकं**) हम सबका (**इहामुत्र च सिद्धिं तन्वन्तु**) इस लोक और परलोक की सिद्धि को बढ़ावें (**सद्धर्मकार्येषु इहामुत्र च सिद्धिं प्रयच्छन्तु नः**) समीचीन कार्यों में इस लोक - परलोक की सिद्धि को हम सबको देवें ।

(**ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते श्रीमत्पार्श्वतीर्थङ्कराय श्रीमद्रत्नत्रय–रूपाय दिव्यतेजोमूर्तये प्रभामण्डलमण्डिताय द्वादशगण–सहिताय अनन्त चतुष्टय–सहिताय**) अरिहन्त भगवान् को नमस्कार, लक्ष्मीवान श्रीमान् पार्श्वतीर्थंकर, श्रीमान् रत्नत्रय रूप दिव्यतेज मूर्ति प्रभामण्डल से सुशोभित, द्वादशगण सहित, अनन्त चतुष्ट सहित (**समवसरणकेवलज्ञान–लक्ष्मी–शोभिताय**) समवसरण केवलज्ञान लक्ष्मी से सुशोभित (**अष्टादशदोषरहिताय**) अठारह दोष रहित (**षट्चत्वारिंशद्गुण संयुक्ताय**) छ्यालीस गुण सहित (**परमपवित्राय सम्यग्ज्ञानाय**) परम पवित्र सम्यग्ज्ञान (**स्वयम्भुवे**) स्वयम्भू के लिये (**सिद्धाय बुद्धाय परमात्मने**) सिद्ध बुद्ध परमात्मा के लिये (**परमसुखाय त्रैलोक्यमहिताय**) परम सुख त्रैलोक्य पूज्य (**सत्यज्ञानाय**) सत्य ज्ञान के धारक (**सत्यब्रह्मणे**) सत्यब्रह्मरूप (**उपसर्गविनाशनाय**) उपसर्ग के विनाशक (**घातिकर्मक्षयङ्कराय**) घातिकर्म के क्षय करने वाले (**अजराय**) बुढ़ापा रहित (**अभवाय**) जन्मरहित (**अस्माकं**) हम सबकी (**व्याधिं घ्नन्तु**) पीड़ा नष्ट होवे (**श्रीजिनाभिषेकपूजनप्रसादात्**) श्रीजिन अभिषेक पूजन के प्रसाद से (**अस्माकं**) हम सबका (**सेवकानां**) सेवकों का (**सर्वदोषरोगशोकभयपीड़ा विनाशनं भवतु**) सभी दोष, रोग, शोक, भय, पीड़ा विनाश होवे ।

(**ॐ नमोऽर्हते भगवते प्रक्षीणाशेष-दोष-कल्मषाय-दिव्य-तेजोमूर्तये श्रीशान्तिनाथाय सर्वविघ्नप्रणाशनाय**) अरिहन्त भगवान् को नमस्कार हो, जिन्होंने सम्पूर्ण दोष रूपी पाप को नष्ट कर दिया है ऐसे शान्तिनाथ जो शान्ति के करने वाले हैं, सर्वविघ्न नाशक तथा (**सर्वरोगाप-मृत्युविनाशनाय**) सभी रोग, अकस्मात् दुर्घटना से होने वाली मृत्यु के नाशक (**सर्वपरकृतक्षुद्रोपद्रव-विनाशनाय)** सभी दूसरों के द्वारा किये गये क्षुद्र उपद्रव के नाशक (**सर्वारिष्टशान्तिकराय**) सभी पीड़ाओं की शान्ति करने वाले (**ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः**) त्रयोदशाक्षरात्मक विद्या (**मम**) मेरी (**सर्व विघ्नशान्तिं कुरु कुरु**) मेरे सभी विघ्नों की शान्ति करो करो (**तुष्टिं पुष्टिं च कुरु कुरु स्वाहा**) सन्तोष, संवर्धन करो करो (**स्वाहा**) शान्ति वाचक और हवन वाचक ।

(**मम कामं**) मेरी कामना (**छिन्धि छिन्धि, भिन्धि भिन्धि**) खण्ड खण्ड हो जाये, नष्ट हो जाये नष्ट हो जाये (**बलिकामं**) नैवेद्य/रसना एवं अन्यकाम सम्बन्धी इच्छा (**छिन्धि छिन्धि, भिन्धि भिन्धि**) खण्ड खण्ड हो जाये, नष्ट हो जाये नष्ट हो जाये (**क्रोधं पापं वैरं च छिन्धि छिन्धि, भिन्धि भिन्धि**) क्रोध, पाप और वैर दूर हो जाये, दूर हो जाये, समाप्त हो जाये, समाप्त हो जाये (**अग्निवायुभयं छिन्धि छिन्धि, भिन्धि भिन्धि**) अग्नि वायु का भय दूर हो जाये, दूर हो जाये (**सर्वशत्रुविघ्नं छिन्धि छिन्धि, भिन्धि भिन्धि**) सभी शत्रु सम्बन्धी विघ्न दूर हो जाये, दूर हो जाये (**सर्वोपसर्गं छिन्धि छिन्धि, भिन्धि भिन्धि**) सभी उपसर्ग नष्ट हो जाये, नष्ट हो जाये (**सर्वविघ्नं छिन्धि छिन्धि, भिन्धि भिन्धि**) सभी विघ्न खण्ड खण्ड हो जाये (**सर्व राजभयं छिन्धि छिन्धि, भिन्धि भिन्धि**) सभी राज्यभय नष्ट हो जाये नष्ट हो जाये (**सर्वचौरदुष्ट भयं छिन्धि छिन्धि, भिन्धि भिन्धि**) सभी चोर, दुष्ट भय दूर हो जाये, दूर हो जाये, समाप्त हो जाये, समाप्त हो जाये (**सर्वसर्प-वृश्चिक सिंहादिभयं छिन्धि छिन्धि, भिन्धि भिन्धि**) सभी सर्प, बिच्छु, सिंहादि का भय दूर हो जाये, दूर हो जाये (**सर्वग्रहभयं छिन्धि छिन्धि, भिन्धि भिन्धि**) सभी ग्रहों का भय दूर हो जाये, दूर हो जाये (**सर्वदोषं व्याधिं डामरं च छिन्धि छिन्धि, भिन्धि भिन्धि**) सभी दोष और भयानक रोग नष्ट हो जाये, रोग नष्ट

हो जाये (**सर्वात्मघातं परघातं च छिन्धि छिन्धि, भिन्धि भिन्धि**) सभी आत्मघातक और परघातक मंत्र खण्ड-खण्ड हो जाये, नष्ट हो जाये, नष्ट हो जाये (**सर्वशूलरोगं कुक्षिरोगं अक्षिरोग शिरोरोगं ज्वररोगं च छिन्धि छिन्धि, भिन्धि भिन्धि**) सभी तीव्र पीड़ा और पेट के रोग, नेत्र रोग, शिररोग, ज्वर रोग समाप्त हो जाये, समाप्त हो जाये (**सर्वनरमारिं छिन्धि छिन्धि, भिन्धि भिन्धि**) सभी मनुष्य संबंधी [प्लेग आदि घातक] रोग नष्ट हो जाये, नष्ट हो जाये (**सर्व-गजाश्व-गोमहिषाजमारिं छिन्धि छिन्धि, भिन्धि भिन्धि**) सभी हाथी, घोड़ा, गाय, भैंस, बकरा की महामारी दूर हो जाये, दूर हो जाये (**सर्व-सस्यधान्य-वृक्षलता-गुल्मपत्रपुष्पफलमारिं छिन्धि छिन्धि, भिन्धि भिन्धि**) सभी अनाज, धान, वृक्ष, लता, वृक्ष के झुण्ड, पत्र, पुष्प, फल संबंधी संक्रामक रोग नष्ट हो जाये, नष्ट हो जाये (**सर्वराष्ट्रमारिं छिन्धि छिन्धि, भिन्धि भिन्धि**) सभी राष्ट्र में व्याप्त महामारी दूर हो जाये, दूर हो जाये (**सर्वक्रूरवेताल शाकिनीडाकिनीभयानि छिन्धि छिन्धि, भिन्धि भिन्धि**) सभी दुष्ट वेताल (विशेषकर शव पर अधिकार रखने वाला भूत) पिशाचनी, भूतनी के भय दूर हो जाये, दूर हो जाये (**सर्ववेदनीयं छिन्धि छिन्धि, भिन्धि भिन्धि**) सभी वेदनीय यानी वेदना सम्बन्धी कर्म नष्ट हो जाये, नष्ट हो जाये (**सर्वमोहनीयं छिन्धि छिन्धि, भिन्धि भिन्धि**) सभी विषयासक्ति सम्बन्धी कर्म नष्ट हो जाये, नष्ट हो जाये (**सर्वापस्मारिं छिन्धि छिन्धि, भिन्धि भिन्धि**) सभी मिर्गी के रोग समाप्त हो जाये, समाप्त हो जाये (**अस्माकं**) हम सबका (**अशुभकर्मजनितदु:खानि छिन्धि छिन्धि, भिन्धि भिन्धि**) अशुभकर्म से उत्पन्न हुआ दु:ख खण्ड-खण्ड हो जाये (**दुष्टजनकृतान्मन्त्रतन्त्रदृष्टि-मुष्टिछलछिद्रदोषान् छिन्धि छिन्धि, भिन्धि भिन्धि**) दुष्ट जन के द्वारा मन्त्र-तन्त्र, दृष्टि सम्बन्धी, मूठ सम्बन्धी छल छिद्र दोष खण्ड खण्ड हो जाये (**सर्वदुष्टदेवदानववीरनरनाहरसिंहयोगिनीकृत दोषान् छिन्धि छिन्धि, भिन्धि भिन्धि**) सभी दुष्ट देव, दानव, वीर, नर, नाहर, सिंह, जादू की शक्ति से किये गये दोष नष्ट हो जाये, नष्ट हो जाये (**सर्वाष्टकुलीन-नागजनितविषभयानि छिन्धि छिन्धि, भिन्धि भिन्धि**) सभी अष्टकुलीन सर्प से उत्पन्न विष सम्बन्धी भय दूर हो जाये दूर हो जाय (**सर्वस्थावरजंगमवृश्चिक-**

सर्पादिकृतदोषान् छिन्धि छिन्धि, भिन्धि भिन्धि) सभी स्थावर, त्रस, बिच्छू, सर्पादि के द्वारा किये गये दोष खण्ड-खण्ड हो जाये (**सर्वसिंहअष्टापदादिकृत दोषान् छिन्धि छिन्धि, भिन्धि भिन्धि**) सभी सिंह, अष्टापद आदि के द्वारा किये गये दोष खण्ड खण्ड हो जाये (**परशत्रुकृतमारणोच्चाटनविद्वेषणमोहनवशीकरणादिकृत दोषान् छिन्धि छिन्धि, भिन्धि भिन्धि**) परशत्रु के द्वारा किये गये मारण, उच्चाटन, विद्वेषण, मोहन, वशीकरणआदि दोष खण्ड-खण्ड हो जाये (**ॐ ह्रीं अस्मभ्यं**) हम सबके लिये (**चक्रविक्रमसत्त्वतेजोबलशौर्यवीर्यशान्ती: पूरय पूरय**) सेना, वीरता, सत्ता, तेज, बल, शौर्य, वीर्य आदि की शान्ति करो-पूर्ण करो पूर्ण करो (**सर्वजीवानन्दनं**) सभी जीवों को आनन्द करो करो (**जनानन्दनं**) सभी मनुष्यों को आनन्द करो करो (**भव्यानन्दनं**) सभी भव्यों को आनन्द करो करो (**गोकुलानन्दनं**) सभी गौपालक को आनन्द करो करो (**सर्वराजानन्दनं**) सभी राजाओं को आनन्द करो करो (**सर्वग्राम-नगर-खेट-कर्वट-मटम्ब-पत्तन-द्रोणमुख-संवाहनानन्दनं करु करु स्वाहा**) सभी ग्राम, नगर, खेट, कर्वट, मटम्ब, पत्तन, द्रोणमुख, संवाहनों में आनन्द करो आनन्द करो (**स्वाहा**) शान्तिवाचक ।

(**यत्सुखं**) जो सुख (**त्रिषु लोकेषु**) तीनों लोकों में (**व्याधिव्यसन वर्जितम्**) व्याधि व्यसन से रहित कहा है (**अभयं क्षेममारोग्यं**) वह अभय, क्षेम, आरोग्य (**स्वस्तिरस्तु**) कल्याण करने वाला होवे ऐसा (**विधीयते**) जानना चाहिए।

(**जयोस्तु**) जय होवे (**नित्यमारोग्यमस्तु**) हमेशा आरोग्य लाभ होवे, (**अस्माकं**) हम सबका (**तुष्टिरस्तु**) सन्तोष होवे (**पुष्टिरस्तु**) संवर्धन होवे (**समृद्धिरस्तु**) समृद्धि होवे (**कल्याणमस्तु**) कल्याण होवे (**सुखमस्तु**) सुख होवे (**अभिवृद्धिरस्तु**) अभिवृद्धि होवे (**दीर्घायुरस्तु**) दीर्घ आयु होवे (**कुल-गोत्रधनानि सदा सन्तु**) कुल-गोत्र-धन हमेशा होवे (**सद्धर्मश्रीबलायुआरोग्यैश्वर्याभिवृद्धिरस्तु**) समीचीन धर्म, लक्ष्मी, बल, आयु, आरोग्य, ऐश्वर्य से वृद्धि होवे (**ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं अ सि आ उ सा अनाहत विद्यायै णमो अरिहंताणं ह्रौं सर्वशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा**) यह व्यन्तर बाधा विनाशक मंत्र है, आघात से रहित विद्या के लिये अरिहन्त को

नमस्कार हो (**ह्रौं**) विघ्न विनाशक सभी की शान्ति करो (**स्वाहा**) शान्तिवाचक।

(**आयुर्वल्लीविलासं**) आयु की लता का आनन्द हो (**सकल-सुख-फलैर्द्राघयित्वाश्वनल्पं**) सम्पूर्ण सुख के फलों के द्वारा शीघ्र अत्यधिक विस्तार होकर (**धीरं वीरं गभीरं**) धीर वीर महत्ता के (**निरुपममुपनयत्वात-नोत्वच्छकीर्तिम्**) उपमा रहित स्थान को प्राप्त हो, स्वच्छ कीर्ति (**प्रथयतु**) विस्तार को प्राप्त होवे जैसे (**तरुणि: स्फूर्यदुच्चै: प्रतापं**) सूर्य की जाज्वल्यमान कान्ति/प्रकाश ऊँचाई पर होती है वैसी (**जगतामुत्तमा शान्तिधारा**) जगत् में उत्तम शान्ति (**सिद्धिं वृद्धिं समृद्धिं, कान्तिं शान्तिं समाधिं**) सिद्धि, वृद्धि, समृद्धि, कान्ति, शान्ति, समाधि का (**वितरतु**) बिखेरे अथवा विस्तार होवे।

(**भगवान् जिनेन्द्र:**) भगवान् जिनेन्द्र (**सम्पूजकानां**) सम्यक् प्रकार से पूजा करने वालों की (**प्रतिपालकानां**) धर्मायतनों की रक्षा करने वालों को (**यतीन्द्रसामान्यतपोधनानां**) मुनीन्द्र-आचार्य तथा सामान्य तपस्वी मुनियों को तथा (**देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञ:**) देश, राष्ट्र, नगर और राजा की (**शान्ति करोतु**) शान्ति करो ।

ॐ ह्रीं अभिषेकान्ते परम शान्तिधारा अन्ते वृषभादि महावीरपर्यन्त चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(कायोत्सर्ग करें)

कुन्दावदात -चल -चामर - चारु - शोभं,
विभ्राजते तव वपु: कलधौत - कान्तम्।
उद्यच्छशाङ्क-शुचिनिर्झर - वारि - धार-
मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौम्भम् ।।

ॐ ह्रीं अष्ट प्रातिहार्य मध्ये श्री जी के मस्तकोपरि छत्रत्रय स्थापयामि ।

छत्र - त्रयं तव विभाति शशाङ्क - कान्त
मुच्चै: स्थितं स्थगित-भानुकर-प्रतापम्।
मुक्ता-फल-प्रकर-जाल-विवृद्ध-शोभं,
प्रख्यापयत् त्रिजगत: परमेश्वरत्वम् ।।

ॐ ह्रीं अष्ट प्रातिहार्य मध्ये श्री जी के पार्श्वभागे चमरद्वयम् स्थापयामि।

विनय पाठ

इह विधि ठाड़ो होय के, प्रथम पढ़े जो पाठ।
धन्य जिनेश्वर देव तुम, नाशे कर्म जु आठ ॥1॥

भावार्थ : इह विधि अर्थात् पूजन के लिए खड़े होने की जो विधि आगम में वर्णित है, उस विधि से विनय पूर्वक खड़े होकर जिनेन्द्र भगवान की विनय के लिए सर्वप्रथम विनय पाठ पढ़ता हूँ। हे जिनेन्द्र भगवान्! आप आठ कर्मों का नाश कर धन्य हो गये हैं।

अनन्त चतुष्टय के धनी, तुम ही हो सिरताज
मुक्ति-वधू के कन्त तुम, तीन भुवन के राज ॥2॥

भावार्थ : हे भगवान्! आप अनन्त सुख, अनन्तदर्शन, अनन्तज्ञान और अनन्तवीर्य-रूप अनन्तचतुष्टय के स्वामी हैं। तीनों लोकों में सर्वश्रेष्ठ हैं, मोक्षरूपी वधू के स्वामी (पति) एवं तीनों लोकों के राजा हैं।

तिहुँ जग की पीड़ा हरन, भवदधि-शोषणहार।
ज्ञायक हो तुम विश्व के, शिवसुख के करतार ॥3॥

भावार्थ : हे जिनेन्द्र भगवान्! आप तीनों लोकों के जीवों के दुःखों को नष्ट करने वाले हैं, संसाररूपी समुद्र को सुखा देने वाले हैं, विश्व को जानने वाले और मोक्ष सुख को करने वाले हैं।

हरता अघ अंधियार के, करता धर्म-प्रकाश।
थिरता-पद दातार हो, धरता निज गुण रास ॥4॥

भावार्थ : हे नाथ! आप पापों के अंधकार को नाश करने वाले हैं, धर्म रूपी प्रकाश के करने वाले हैं, स्थिर पद अर्थात् मोक्ष पद (सिद्ध पद) के देने वाले और आप अपने ही अनन्त गुणों की राशि के स्वामी हैं।

धर्मामृत उर जलधि सों, ज्ञानभानु तुम रूप।
तुमरे चरण-सरोज को, नावत तिहुं जग भूप ॥5॥

भावार्थ : हे भगवान्! आपका हृदय धर्मरूपी अमृत से भरे बादलों के समान है, आपका स्वरूप ज्ञान के सूर्य के समान है, आपके चरणरूपी कमलों में तीनों लोकों के राजा नमन करते हैं।

मैं वन्दों जिनदेव को, करि अति निरमल भाव।
कर्म-बन्ध के छेदने, और न कछु उपाव ॥6॥

भावार्थ : हे जिनेन्द्र भगवान्! मैं आपकी अत्यन्त निर्मल भावों से वन्दना करता हूँ, क्योंकि कर्मों के बन्ध को नष्ट करने के लिए आप ही समर्थ हैं। आपकी पूजा वन्दना के अलावा कर्मबन्ध नष्ट करने का कोई और दूसरा उपाय नहीं है।

भविजन को भव-कूप तें, तुम ही काढ़नहार।
दीन-दयाल अनाथ-पति, आतम गुण भण्डार ॥7॥

भावार्थ : हे जिनेन्द्र भगवान्! भव्य जीवों को भवरूपी कुँए से निकालने में आप ही समर्थ हैं, दीन-गरीबों पर दया करने वाले हैं, अनाथों के नाथ हैं और आप अपने स्वाभाविक आत्म गुणों के भण्डार हैं।

चिदानन्द निर्मल कियो, धोय कर्म-रज मैल।
सरल करी या जगत में, भविजन को शिवगैल ॥8॥

भावार्थ : हे भगवान्! आपने अशुद्ध आत्मा की कर्मरूपी धूल को धोकर निर्मल आत्म द्रव्य बनाकर, अनन्त सुख प्राप्त कर, संसार में भव्य जीवों को मोक्ष का मार्ग सरल बना दिया है।

तुम पद-पङ्कज पूजतैं, विघ्न-रोग टर जाय।
शत्रु मित्रता को धरैं, विष निरविषता थाय ॥9॥

भावार्थ : हे जिनेन्द्र देव! आपके चरणरूपी कमलों की पूजा से सभी विघ्न एवं सभी रोग नष्ट हो जाते हैं। शत्रु भी मित्र बन जाते हैं और विष भी निर्विष हो जाता है।

चक्री खगधर इन्द्र पद, मिलें आपतें आप।
अनुक्रम करि शिवपद लहें, नेम सकल हनि पाप ॥10॥

भावार्थ : हे जिनेन्द्र! आपकी पूजा से चक्रवर्ती पद, विद्याधर और इन्द्र का पद अपने आप प्राप्त हो जाता है। नियम से सभी पाप नष्ट हो जाते हैं और परम्परा से (क्रम क्रम से) मोक्षपद भी प्राप्त हो जाता है।

तुम बिन मैं व्याकुल भयो, जैसे जल बिन मीन।
जन्म-जरा मेरी हरो, करो मोहि स्वाधीन ॥11॥

भावार्थ : हे जिनेन्द्र भगवान्! मैं आपके बिना अत्यन्त दुःखी हुआ जैसे पानी के

बिना मछली दु:खी होती है। जन्म, जरा और मृत्यु का नाश कर मुझे आत्मीक सुख प्रदान कर स्वाधीन करने की कृपा करें।

पतित बहुत पावन किये, गिनती कौन करेव।
अञ्जन से तारे कुधी, जय जय जय जिनदेव॥12॥

भावार्थ : हे जिनेन्द्र भगवान्! आपने बहुत से पापियों को पवित्र किया है, जिनकी कोई गिनती नहीं कर सकता। अंजन चोर के समान अज्ञानी को भी आपने पार लगा दिया, हे जिनेन्द्र भगवान्! आपकी जय हो, जय हो, जय हो।

थकी नाव भवदधि विषैं, तुम प्रभु पार करेव।
खेवटिया तुम हो प्रभु, जय-जय जय जिनदेव॥13॥

भावार्थ : हे जिनेन्द्र भगवान्! संसार रूपी समुद्र में मेरी नाव भटकते-भटकते थक गई है, अब आप ही पार कीजिए। आप ही उत्तम खेवटिया हैं। हे जिनेन्द्र भगवान्! आपकी जय हो, जय हो, जय हो।

राग सहित जग में रुल्यो, मिले सरागी देव।
वीतराग भेट्यो अबै, मेटो राग कुटेव॥14॥

भावार्थ : हे जिनेन्द्र भगवान्! आज तक मैं संसार में राग सहित होकर रुलता फिरा हूँ। अभी तक मुझे सभी सरागी देव मिले, अब मुझे वीतरागी देव मिले हैं अर्थात् वीतरागी देव से भेंट हुई है। हे भगवान्! आप मेरे राग की बुरी हठ का नाश कीजिए।

कित निगोद कित नारकी, कित तिर्यञ्च अज्ञान।
आज धन्य मानुष भयो, पायो जिनवर थान॥15॥

भावार्थ : हे जिनेन्द्र भगवान्! मैंने कितनी पर्याय निगोद की, कितनी पर्याय नारकी की, कितनी पर्याय तिर्यंच की अज्ञानावस्था में व्यतीत की, आज यह मनुष्य पर्याय धन्य हो गई, क्योंकि मैंने आपकी शरण प्राप्त कर ली है।

तुमको पूजें सुरपति, अहिपति नरपति देव।
धन्य भाग्य मेरो भयो, करन लग्यो तुम सेव॥16॥

भावार्थ : हे जिनेन्द्र भगवान्! आपकी पूजा इन्द्र, नागेन्द्र, चक्रवर्ती आदि करते हैं, आपकी सेवा पूजा करने से मेरा भाग्य भी धन्य हो गया है।

अशरण के तुम शरण हो, निराधार आधार।
मैं डूबत भव सिन्धु में, खेव लगाओ पार॥17॥

भावार्थ : हे जिनेन्द्र देव! आप अशरण को शरण देने वाले हैं। जिनके जीवन का कोई आधार नहीं है उन्हें आधार देने वाले हैं। हे भगवान् मैं भवरूपी समुद्र में डूब रहा हूँ। आप मेरी नाव चलाकर (खे कर) पार लगा दीजिए।

इन्द्रादिक गणपति थके, कर विनती भगवान।
अपनो विरद निहारिकैं, कीजे आप समान॥18॥

भावार्थ : हे जिनेन्द्र भगवान्! आपकी स्तुति, विनती करते-करते गणधर और इन्द्र आदि भी थक गये हैं, तब मैं कैसे आपकी विनती कर सकता हूँ, आप अपने यश को देखकर मुझे अपने समान बना लीजिए।

तुमरी नेक सुदृष्टि तें, जग उतरत है पार।
हा हा डूब्यो जात हों, नेक निहार निकार॥19॥

भावार्थ : हे नाथ! आपकी एक अच्छी दृष्टी से ही जीव संसार-समुद्र के पार हो जाता है। हाय, हाय मैं संसार समुद्र में डूब रहा हूँ। एक बार सुदृष्टि से निहार कर (देखकर) मुझे निकाल लीजिए।

जो मैं कह हूँ और सों, तो न मिटे उरझार।
मेरी तो तोसों बनी, यातैं करौं पुकार॥20॥

भावार्थ : हे भगवान्! यदि मैं अपने अन्तर्मन की वेदना किसी और से कहूँ तो वह वेदना मिटने वाली नहीं है, मेरी बिगड़ी तो आप ही बना सकते हैं, अतः मैं आपसे ही अपने दुःखों को मिटाने की पुकार कर रहा हूँ।

वन्दों पाँचों परमगुरु, सुरगुरु वन्दत जास।
विघनहरन मङ्गलकरन, पूरन परम प्रकाश॥21॥

भावार्थ : गणधर भी जिनकी वंदना करते हैं, उन पाँचों परमेष्ठी पंच महागुरु की वंदना करता हूँ। आप पूर्ण उत्कृष्ट आत्मज्योति से प्रकाशित हैं, आप विघ्नों का नाश करने वाले और मंगल के करने वाले हैं।

चौबीसों जिनपद नमों, नमों शारदा माय।
शिवमग साधक साधु नमि, रच्यो पाठ सुखदाय॥22॥

भावार्थ : चौबीसों तीर्थंकरों को नमन करता हूँ, जिनवाणी माता को नमन करता

हूँ और मोक्षमार्ग की साधना करने वाले सर्व साधु को नमन कर सुख देने वाले इस पाठ की रचना करता हूँ।

मङ्गल मूरत परम पद, पञ्च धरो नित ध्यान।
हरो अमङ्गल विश्व का, मङ्गलमय भगवान।।23।।

भावार्थ : परम पद को धारण करने वाले पंच परमेष्ठी मंगल स्वरूप हैं (मंगल की मूर्ति हैं) मैं इनका सदा ध्यान करता हूँ। हे मंगलमय भगवान्! आप संसार के सभी अमंगलों का नाश कर दीजिए।

मङ्गल जिनवर पद नमों, मङ्गल अर्हन्त देव।
मङ्गलकारी सिद्ध पद, सो वन्दौं स्वयमेव।।24।।

भावार्थ : हे जिनेन्द्र भगवान्! आपके मंगलकारी चरणों को नमन करता हूँ। अर्हन्त भगवान मंगलकारी हैं। सिद्ध भगवान मंगलकारी हैं। अतः मैं इनकी अपने मंगल के लिए वन्दना करता हूँ।

मङ्गल आचारज मुनि, मङ्गल गुरु उवज्झाय।
सर्व साधु मङ्गल करो, वन्दौं मन-वच-काय।।25।।

भावार्थ : दिगम्बर आचार्य मंगल स्वरूप हैं, उपाध्याय गुरु मंगल स्वरूप हैं एवं सभी साधु मंगल के करने वाले हैं, मैं इनकी मन, वचन, काय से वन्दना करता हूँ।

मङ्गल सरस्वती मात का, मङ्गल जिनवर धर्म।
मङ्गलमय मङ्गल करो, हरो असाता कर्म।।26।।

भावार्थ : जिनवाणी माता मंगल स्वरूप है, जिनेन्द्र भगवान् के द्वारा कहा गया धर्म मंगलकारी है। हे मंगलमय जिनेन्द्र भगवान्! मेरे असाता कर्म का क्षय करके मुझे मंगलमय कीजिए।

या विधि मङ्गल से सदा, जग में मङ्गल होत।
मङ्गल 'नाथूराम' यह, भव सागर दृढ़ पोत।।27।।

भावार्थ : इस प्रकार मंगल करने से संसार में मंगल होता है। पं. श्री नाथूराम जी (कवि) कहते हैं कि यह मंगल पाठ (विनय पाठ) भवरूपी समुद्र को पार करने के लिए मजबूत नाव के समान है।

(पुष्पाञ्जलि क्षिपामि)

●●●

पूजा पीठिका

ॐ जय जय जय नमोऽस्तु, नमोऽस्तु, नमोऽस्तु

अर्थ : हे परमेष्ठि भगवन् आप जयवन्त होओ, जयवन्त होओ, जयवन्त होओ। आपके लिए हमारा नमस्कार हो, नमस्कार हो, नमस्कार हो।

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं ।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं ।।१।।

ॐ ह्रीं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

अन्वयार्थ : (लोए सव्व अरिहंताणं) लोक में सभी अरिहंतों को **(णमो)** नमस्कार हो **(लोए सव्व सिद्धाणं)** लोक में सभी सिद्धों को **(णमो)** नमस्कार हो **(लोए सव्व आयरियाणं)** लोक में सभी आचार्य को **(णमो)** नमस्कार हो **(लोए सव्व उवज्झायाणं)** लोक में सभी उपाध्याय को **(णमो)** नमस्कार हो और **(लोए सव्व साहूणं)** लोक में सभी साधुओं को **(णमो)** नमस्कार हो ।

(मैं इस अनादि-निधन मूलमंत्र को नमस्कार करता हूँ)

चत्तारि मंगलं, अरहंत मंगलं, सिद्ध मंगलं,
साहु मंगलं, केवलि पण्णत्तो धम्मो मंगलं ।।
चत्तारि लोगोत्तमा, अरहंत लोगोत्तमा, सिद्ध लोगोत्तमा,
साहु लोगोत्तमा, केवलि पण्णत्तो धम्मो लोगोत्तमो।।
चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरहंत सरणं पव्वज्जामि,
सिद्ध सरणं पव्वज्जामि, साहु सरणं पवव्वज्जामि,
केवलि पण्णत्तं धम्मो सरणं पव्वज्जामि ।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

अन्वयार्थ : (चत्तारि मंगलं) लोक में चार मंगल हैं **(अरहंत मंगल)** अरिहंत भगवान् मंगल हैं **(सिद्ध मंगलं)** सिद्ध भगवान् मंगल हैं **(साहु मंगल)** साधु परमेष्ठी **(आचार्य, उपाध्याय, साधु)** मंगलकारक हैं और **(केवली पण्णत्तो धम्मो मंगलं)** केवली प्रणीत धर्म मंगल स्वरूप है **(चत्तारि लोगोत्तमा)** लोक में चार उत्तम हैं **(अरहंत लोगोत्तमा)** अरिहंत परमेष्ठी लोक में उत्तम हैं **(सिद्ध लोगोत्तमा)** सिद्ध परमेष्ठी लोक में उत्तम हैं **(साहु लोगोत्तमा)** साधु परमेष्ठी लोक में उत्तम हैं **(केवली पण्णत्तो धम्मो लोगोत्तमो)** केवली प्रणीत धर्म लोक में उत्तम है **(चत्तारि सरणं पव्वज्जामि)** मैं चारों की शरण जाता हूँ **(अरहंत सरणं पव्वज्जामि)** अरिहंत भगवान् की शरण जाता हूँ **(सिद्ध सरणं पव्वज्जामि)** सिद्ध भगवान् की शरण जाता हूँ **(साहु सरणं पव्वज्जामि)** साधु परमेष्ठी की शरण जाता हूँ तथा **(केवलि पण्णत्तं धम्मो सरणं पव्वज्जामि)** केवली प्रणीत धर्म की शरण जाता हूँ ।

अपवित्रः पवित्रो वा, सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा ।
ध्यायेत्पंच-नमस्कारं, सर्वपापैः प्रमुच्यते ।।१।।

अन्वयार्थ : (अपवित्रः) अपवित्र हो **(वा)** अथवा **(पवित्रः)** पवित्र हो **(सुस्थितः)** सुस्थित हो **(वा)** अथवा **(दुःस्थितः अपि)** दुःस्थित भी हो **(पञ्च-नमस्कार)** जो पञ्च-नमस्कार मंत्र को **(ध्यायेत्)** ध्यान करता है वह **(सर्वपापैः प्रमुच्यते)** सभी पापों से छूट जाता है।

अपवित्रः पवित्रो वा, सर्वावस्था गतोऽपि वा ।
यः स्मरेत्परमात्मानं, स बाह्याभ्यंतरे शुचिः ।।२।।

अन्वयार्थ : (अपवित्रः) अपवित्र हो **(वा)** अथवा **(पवित्रः)** पवित्र हो

(वा) अथवा **(सर्वावस्थां)** सभी अवस्थाओं में **(गतः अपि)** गया हुआ भी **(यः)** जो **(परमात्मानं)** परमात्मा को **(स्मरेत्)** स्मरण करता है **(सः)** वह **(बाह्याभ्यंतरे)** बाहर और अंतर में **(शुचिः)** पवित्र होता है।

अपराजित-मंत्रोऽयं, सर्व-विघ्न-विनाशनः ।
मंगलेषु च सर्वेषु, प्रथमं मंगलं मतः ।।३।।

अन्वयार्थ : (अयं) यह **(अपराजित-मंत्रः)** अपराजित मंत्र **(सर्व-विघ्न-विनाशनः)** सभी विघ्नों का नाशक है **(च)** और **(सर्वेषु मंगलेषु)** सभी मंगलों में **(प्रथमं मंगलं मतः)** पहला मंगल माना गया है।

एसो पंच णमोयारो, सव्व-पावप्पणासणो ।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ।।४।।

अर्थ : (एसो) यह **(पंच णमोयारो)** पञ्च णमोकार मंत्र **(सव्व-पावप्पणासणो)** सभी पापों का नाश करने वाला **(च)** और **(सव्वेसिं मंगलाणं)** सभी मंगलों में **(पढमं मंगलं)** पहला मंगल **(हवइ)** होता है।

अर्हमित्यक्षरं ब्रह्म, वाचकं परमेष्ठिनः ।
सिद्धचक्रस्य सद्बीजं, सर्वतः प्रणमाम्हम् ।।५।।

अन्वयार्थ : (अर्हम् इति अक्षरं ब्रह्म परमेष्ठिनः वाचकं) अर्हम् इस प्रकार यह अक्षर, ब्रह्म-चौबीस तीर्थंकर और 'अ' से 'ह' पर्यन्त वर्णमाला से उत्पन्न शब्दब्रह्म-रूप द्वादशांग जिनवाणी और परमेष्ठी का वाचक है **(सिद्धचक्रस्य)** सिद्धों के समूह का **(सद्बीजं)** समीचीन बीज है ऐसे 'अर्हम्' इस बीजाक्षर को **(अहम्)** मैं **(सर्वतः)** सब ओर से **(प्रणमामि)** प्रणाम करता हूँ।

कर्माष्टक–विनिर्मुक्तं, मोक्ष–लक्ष्मी–निकेतनं ।
सम्यक्त्वादि–गुणोपेतं, सिद्धचक्रं नमाम्यहम् ।।६।।

अन्वयार्थ : (अहं) मैं **(कर्माष्टक–विनिर्मुक्तं)** आठों कर्मों से रहित **(मोक्ष लक्ष्मीनिकेतनं)** मोक्षलक्ष्मी के घर **(सम्यक्त्वादि गुणोपेतं)** सम्यक्त्वादि गुणों से युक्त **(सिद्धचक्रं)** सिद्धों के समूह को **(नमामि)** नमस्कार करता हूँ ।

विघ्नौघा: प्रलयं यान्ति, शाकिनी–भूत–पन्नगा: ।
विषं निर्विषतां याति, स्तूयमाने जिनेश्वरे ।।७।।

अन्वयार्थ : (जिनेश्वरे) जिनेश्वर की **(स्तूयमाने)** स्तुति करने पर **(शाकिनी–भूत–पन्नगा:)** शाकिनी, भूत और पन्नगों के **(विघ्नौघा:)** विघ्नों के समूह **(प्रलयं)** नाश **(यान्ति)** हो जाते हैं **(विषं)** विष **(निर्विषतां)** विष रहितपने को **(याति)** प्राप्त होता है ।

।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

उदकचंदनतंदुलपुष्पकै: चरुसुदीपसुधूप–फलार्घकै: ।
धवल–मंगलगान–रवाकुले जिनगृहे कल्याणमहं यजे ।।

अन्वयार्थ : (अहं) मैं **(धवल–मंगलगान–रवाकुले)** प्रशस्त मंगलगानों के शब्दों से व्याप्त होकर **(जिनगृहे)** जिनमन्दिर में **(उदकचंदनतंदुल पुष्पकैश्)** जल, चंदन, चावल, पुष्पों के द्वारा तथा **(चरुसुदीपसुधूप–फलार्घकै:)** नैवेद्य, सुदीप, सुधूप, फलों और अर्घ्य के द्वारा **(कल्याणं)** पञ्चकल्याणक को **(यजे)** पूजता हूँ ।

ॐ ह्रीं भगवतो गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाणपञ्चकल्याणकेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
ॐ ह्रीं भगवज्जिनसहस्रनामेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
ॐ ह्रीं द्वादशांगश्रुतज्ञानेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

पूजा प्रतिज्ञा पाठ

श्रीमज्जिनेन्द्रमभि - वंद्य - जगत्त्रयेशं,
स्याद्वाद - नायक - मनंत - चतुष्टयार्हम् ।
श्रीमूलसंघ - सुदृशां सुकृतैक - हेतुः ,
जैनेन्द्र - यज्ञ - विधिरेष मयाभ्यधायि ।।१।।

अन्वयार्थ : (जगत्त्रयेशं) तीनों लोकों के स्वामी **(स्याद्वाद-नायकं)** स्याद्वाद विद्या के नायक **(अनंत-चतुष्टय-अर्हम्)** अनन्तदर्शन, अनन्तज्ञान, अनन्त-सुख, अनन्तवीर्य के धारक **(श्रीमज्जिनेन्द्रं)** अंतरंग और बहिरंग लक्ष्मी के स्वामी जिनेन्द्र भगवान् को **(अभिवंद्य)** वंदना करके **(मया)** मेरे द्वारा **(एषः)** यह **(जैनेन्द्र-यज्ञ-विधिः)** जिनेन्द्रदेव की पूजन विधि **(अभ्यधायि)** कही जाती है जो **(श्रीमूलसंघ-सुदृशां)** श्रीमूलसंघ के सम्यग्दृष्टियों के **(सुकृतैक हेतुः)** पुण्य बंध का प्रधान कारण है ।

स्वस्ति त्रिलोक-गुरवे जिन-पुंगवाय,
स्वस्ति स्वभाव - महिमोदय - सुस्थिताय ।
स्वस्ति प्रकाश - सहजोर्जित - दृङ्मयाय,
स्वस्ति प्रसन्न - ललिताद्भुत - वैभवाय ।।२।।

अन्वयार्थ : (त्रिलोक-गुरवे) तीनों लोकों के गुरु **(जिन-पुंगवाय)** कषायों के जीतने वाले मुनीश्वरों में प्रधान जिनेन्द्र के लिए **(स्वस्ति)** कल्याण हो **(स्वभाव-महिमोदय-सुस्थिताय)** स्वाभाविक महिमा के उदय होने से स्वभाव में भले प्रकार स्थित जिनेन्द्रदेव के लिए **(स्वस्ति)** कल्याण हो **(प्रकाश-सहजोर्जित-दृङ्मयाय)** ज्ञानरूप प्रकाश से स्वाभाविक वृद्धि को प्राप्त केवलदर्शन से युक्त जिनेन्द्र देव के लिए **(स्वस्ति)** कल्याण हो **(प्रसन्न-ललिताद्भुत-वैभवाय)** उज्ज्वल, सुन्दर तथा अद्भुत समवसरणादि वैभव वाले जिनेन्द्र देव के लिए **(स्वस्ति)** कल्याण हो ।

स्वस्त्युच्छलद् - विमलबोध- सुधाप्लवाय,
स्वस्ति स्वभाव - परभाव - विभासकाय ।
स्वस्ति त्रिलोक - विततैक - चिदुद्गमाय,
स्वस्ति त्रिकाल - सकलायत - विस्तृताय ।।३।।

अन्वयार्थ : (उच्छलद्-विमलबोध-सुधाप्लवाय) उछलते हुए निर्मल केवलज्ञानरूपी अमृत के प्रवाह वाले जिनेन्द्र भगवान् के लिए **(स्वस्ति)** कल्याण होवे **(स्वभाव-परभाव-विभासकाय)** स्वभाव और परभाव के प्रकाशक जिनेन्द्र भगवान् के लिए **(स्वस्ति)** कल्याण होवे **(त्रिलोक-विततैक-चिदुद्-गमाय)** ज्ञान की अपेक्षा तीनों लोकों में व्याप्त एकमात्र चैतन्य को प्रकट करने वाले जिनेन्द्र भगवान् के लिए **(स्वस्ति)** कल्याण होवे **(त्रिकाल-सकलायत-विस्तृताय)** त्रिकालवर्ती सर्व पदार्थों में ज्ञान के द्वारा फैले हुए जिनेन्द्रदेव के लिए **(स्वस्ति)** कल्याण होवे ।

द्रव्यस्य शुद्धिमधिगम्य यथानुरूपं,
भावस्य शुद्धिमधिकामधिगंतुकामः ।
आलंबनानि विविधान्यवलम्ब्य वल्गन्,
भूतार्थ-यज्ञ-पुरुषस्य करोमि यज्ञम् ।।४।।

अन्वयार्थ : (भावस्य) भावों की **(शुद्धि अधिकाम्)** शुद्धता को अधिक **(अधिगंतुकामः)** पाने का अभिलाषी मैं **(यथानुरूपं)** देशकाल के अनुरूप **(द्रव्यस्य शुद्धि)** द्रव्य की शुद्धि [शरीर, वस्त्र, पूजा की द्रव्य-जल, चन्दनादि की शुद्धता को] **(अधिगम्य)** प्राप्तकर **(वल्गन्)** प्रसन्न होते हुए **(विविधानि आलंबनानि)** अनेक प्रकार के - जिनस्तवन, जिनबिम्बदर्शन आदि आलंबनों को **(अवलम्ब्य)** आश्रय लेकर **(भूतार्थ-यज्ञ-पुरुषस्य)** वास्तविक/यथार्थ पूज्य पुरुष अरिहंत का **(यज्ञम् करोमि)** पूजन करता हूँ ।

अर्हत्पुराण – पुरुषोत्तम पावनानि,
वस्तून्यनूनमखिलान्ययमेक एव ।
अस्मिन्न–ज्वलद् – विमल – केवलबोधवह्नौ,
पुण्यं समग्रमहमेकमना जुहोमि ।।५।।

ॐ ह्रीं विधियज्ञप्रतिज्ञायै जिनप्रतिमाग्रे पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि/क्षिपेत् ।

अन्वयार्थ : (अर्हत्) हे अर्हन्त! **(पुराण पुरुषोत्तम)** हे पुराण पुरुषोत्तम ! **(अनूनं)** उत्तम **(अखिलानि पावनानि वस्तुनि)** सम्पूर्ण, पवित्र, वस्तुओं को **(अयं)** यह **(एक एव)** एक ही **(अस्मिन्)** इस **(ज्वलद्–विमल–केवल–बोधवह्नौ)** देदीप्यमान, निर्मल, केवलज्ञानरूपी अग्नि में **(अहं)** मैं **(एकमना)** एकाग्रमन से **(समग्रं)** समस्त **(पुण्य)** पुण्य को **(जुहोमि)** हवन करता हूँ ।

स्वस्ति मंगल पाठ

श्रीवृषभो नः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअजितः ।
श्रीसंभवः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअभिनन्दनः ।
श्रीसुमतिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री पद्मप्रभः ।
श्रीसुपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीचन्द्रप्रभः ।
श्रीपुष्पदन्तः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशीतलः ।
श्रीश्रेयान् स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवासुपूज्यः ।
श्रीविमलः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अनन्तः ।
श्रीधर्मः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशान्तिः ।
श्रीकुन्थुः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअरनाथः ।
श्रीमल्लिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीमुनिसुव्रतः ।
श्रीनमिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीनेमिनाथः ।
श्रीपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवर्द्धमानः ।

अर्थ : (नः) हम सबके लिए **(श्रीवृषभो स्वस्ति)** श्री ऋषभ जिनेन्द्र मंगलकारी हों । (इसी तरह शेष तीर्थंकर का भी अर्थ लगावें)

भावार्थ : श्री ऋषभ जिनेन्द्र हम सबके लिए मंगलकारी हों। **श्री अजित** जिनेन्द्र हम सबके लिए मंगल स्वरूप हों। **श्री संभव** जिन हम सबके लिए मंगलकारी हो। **श्री अभिनंदन** जिनेन्द्र हम सबके लिए मंगल स्वरूप हों। **श्री सुमति** जिनेन्द्र हम सबको मंगलकारी हों। **श्री पद्मप्रभ** जिनेन्द्र हम सबके लिए मंगल स्वरूप हों। **श्री सुपार्श्व** जिनेन्द्र हम सबके लिए मंगल स्वरूप हों। **श्री चन्द्रप्रभ** जिनेन्द्र हम सबके लिए मंगल स्वरूप हों। **श्री पुष्पदन्त** जिनेन्द्र हम सबके लिए मंगल स्वरूप हों। **श्री शीतलनाथ** जिनेन्द्र हम सबके लिए मंगल स्वरूप हों। **श्री श्रेयांसनाथ** जिनेन्द्र हम सबके लिए मंगल स्वरूप हों। **श्री वासुपूज्य** जिनेन्द्र हम सबके लिए मंगल स्वरूप हों। **श्री विमलनाथ** जिनेन्द्र हम सबके लिए मंगलकारी हों। **श्री अनन्तनाथ** जिनेन्द्र हम सबके लिए मंगल स्वरूप हों। **श्री धर्मनाथ** जिनेन्द्र हम सबके लिए मंगल स्वरूप हों। **श्री शान्तिनाथ** जिनेन्द्र हम सबके लिए मंगलकारी हों। **श्री कुन्थुनाथ** जिनेन्द्र हम सबके लिए मंगल स्वरूप हों। **श्री अरनाथ** जिनेन्द्र हम सबके लिए मंगलकारी हों। श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्र हम सबके लिए मंगल स्वरूप हों। **श्री मुनिसुव्रतनाथ** जिनेन्द्र हमारे लिए मंगलकारी हों। **श्री नमिनाथ** जिनेन्द्र हम सबके लिए मंगल स्वरूप हों। **श्री नेमिनाथ** जिनेन्द्र हम सबके लिए मंगलकारी हों। **श्री पार्श्वनाथ** जिनेन्द्र हम सबके लिए मंगल स्वरूप हों। **श्री वर्धमान** जिनेन्द्र हम सबके लिए मंगलकारी हों ।

(मैं पुष्पांजलि क्षेपण करता हूँ)

परमर्षि स्वस्ति मंगलपाठ

नित्याप्रकंपाद्भुत – केवलौघाः, स्फुरन्मनः पर्ययशुद्धबोधाः।
दिव्यावधिज्ञानबलप्रबोधाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ।।१।।

अर्थ : **(नित्य–अप्रकंप–अद्भुत–केवलौघाः)** अविनाशी, अचल, अद्भुत, केवलज्ञान की राशि स्वरूप **(स्फुरन्मनः पर्यय–शुद्धबोधाः)** देदीप्यमान मनःपर्यय ज्ञानरूप शुद्धज्ञान वाले तथा **(दिव्यावधि–ज्ञानबल–प्रबोधाः)** दिव्य–अवधिज्ञान के बल से प्रबुद्ध **(परमर्षयः)** महान् ऋषिगण **(नः)** हमारा **(स्वस्ति)** कल्याण **(क्रियासुः)** करें ।

कोष्ठस्थ–धान्योपम–मेकबीजं, संभिन्न–संश्रोतृ–पदानुसारि ।
चतुर्विधं बुद्धि–बलं दधानाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नमः।।२।।

अर्थ : **(कोष्ठस्थ–धान्योपमं)** कोष्ठस्थ–धान्योपम **(एकबीजं)** एक–बीज **(संभिन्नसंश्रोतृ)** संभिन्नसंश्रोतृत्व और **(पदानुसारि)** पदानुसारित्व **(चतुर्विधं)** इन चार प्रकार की **(बुद्धि–बलं)** बुद्धि के बल अर्थात् बुद्धि–ऋद्धि को **(दधानाः)** धारण करने वाले **(परमर्षयः)** महान् ऋषिगण **(नः)** हमारा **(स्वस्ति)** कल्याण **(क्रियासुः)** करें ।

संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरा–दास्वादन – घ्राण – विलोकनानि।
दिव्यान्–मतिज्ञान–बलाद्वहन्तः,स्वस्तिक्रियासु परमर्षयो नः।।३।।

अर्थ : **(दिव्यान्–मतिज्ञान–बलाद्)** दिव्य मतिज्ञान के बल से **(दूरात्)** दूर से ही **(संस्पर्शनं)** अच्छी तरह स्पर्शन/छूना **(संश्रवणं)** भलीभाँति श्रवण/ सुनना **(च)** और **(आस्वादन–घ्राण–विलोकनानि)** आस्वादन/स्वाद लेना, घ्राण / सूँघना तथा अवलोकन / देखने रूप पञ्चेन्द्रियों के विषयों को **(वहन्तः)** धारण करने वाले **(परमर्षयः)** महान् ऋषिगण **(नः)** हमारा **(स्वस्ति)** कल्याण **(क्रियासुः)** करें।

प्रज्ञा–प्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः, प्रत्येक–बुद्धाः दश–सर्व–पूर्वैः ।
प्रवादिनोऽष्टांग–निमित्तविज्ञाः,स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।४।।

अर्थ : **(प्रज्ञा-प्रधानाः समृद्धाः श्रमणाः)** बुद्धि में प्रधान एवं समृद्ध मुनिजन **(प्रत्येक बुद्धाः)** प्रत्येकबुद्ध **(दशसर्वपूर्वैः)** अभिन्नदशपूर्व और चतुर्दशपूर्व **(प्रवादिनः)** प्रवादित्व **(अष्टांग-निमित्तविज्ञाः)** अष्टांग-महानिमित्त के ज्ञाता **(परमर्षयः)** महान् ऋषिगण **(नः)** हमारा **(स्वस्ति)** कल्याण **(क्रियासुः)** करें ।

जंघानल-श्रेणि-फलांबु-तंतु,-प्रसून-बीजाङ्कुर-चारणाह्वः ।
नभोऽङ्गण-स्वैरविहारिणश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ।।५।।

अर्थ : **(जंघानल-श्रेणि-फलांबु-तंतु-प्रसून-बीजाङ्कुर-चारणाह्वाः)** जंघा, अग्निशिखा, आकाश प्रदेशों की पंक्ति, फल, जल, तंतु, फूल, बीज, अंकुर पर चलने वाले चारण नामक ऋद्धि के धारक **(च)** और **(नभोऽङ्गण-स्वैर-विहारिणः)** आकाश में स्वच्छंद विहार करने वाले **(परमर्षयः)** महान् ऋषिगण **(नः)** हमारा **(स्वस्ति)** कल्याण **(क्रियासुः)** करें ।

अणिम्नि दक्षा कुशला महिम्नि, लघिम्निशक्ताः कृतिनो गरिम्णि।
मनोवपुर्वाग्बलिनश्च नित्यं, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।६।।

अर्थ : **(अणिम्नि दक्षाः)** अणिमा ऋद्धि में दक्ष **(महिम्नि कुशलाः)** महिमा ऋद्धि में कुशल **(लघिम्नि शक्ताः)** लघिमा ऋद्धि में समर्थ **(गरिम्णि कृतिनः)** गरिमा ऋद्धि में चतुर **(च)** और **(मनोवपुर्वाग्बलिनः)** मन-बल ऋद्धि, वचन-बल ऋद्धि, काय-बल ऋद्धि के धारी **(परमर्षयः)** महान् ऋषिगण **(नित्यं)** सदा **(नः)** हमारा **(स्वस्ति)** कल्याण **(क्रियासुः)** करें ।

सकाम-रूपित्व-वशित्वमैश्यं, प्राकाम्यमन्तर्द्धिमथाप्तिमाप्ताः ।
तथाऽप्रतीघातगुणप्रधानाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ।।७।।

अर्थ : **(सकाम-रूपित्व-वशित्वम्)** कामरूपित्व, वशित्व **(ऐश्यम्)** ईशित्व **(प्राकाम्यं)** प्राकाम्य **(अन्तर्द्धिम्)** अन्तर्धान **(अथ)** और **(आप्तिम् आप्ताः)** आप्ति-ऋद्धि को प्राप्त **(तथा)** और **(अप्रतीघात-**

गुणप्रधाना:) अप्रतिघात गुण में प्रधान **(परमर्षय:)** महान् ऋषिगण **(न:)** हमारा **(स्वस्ति)** कल्याण **(क्रियासु:)** करें ।

दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्र, घोरं तपो घोरपराक्रमस्था: ।
ब्रह्मापरं घोरगुणाश्चरंत:, स्वस्ति क्रियासु: परमर्षयो न: ।।८।।

अर्थ : **(दीप्तं)** दीप्ति **(तप्तं)** तप्त **(च)** और **(महा)** महा **(उग्रं)** उग्रं **(घोरं)** घोर **(च)** और **(तप:)** तप **(घोरपराक्रमस्था:)** घोर-पराक्रम में स्थित **(तथा)** और **(ब्रह्मापरं)** अघोर ब्रह्मचर्य **(घोरगुणा:)** घोर गुणों वाले तथा इन्हीं का **(चरंत:)** आचरण करने वाले **(परमर्षय:)** महान् ऋषिगण **(न:)** हमारा **(स्वस्ति)** कल्याण **(क्रियासु:)** करें ।

आमर्ष-सर्वौषधयस्तथाशी, र्विषाविषा दृष्टिविषाविषाश्च ।
सखिल्लविड्जल्लमलौषधीशा:, स्वस्ति क्रियासु: परमर्षयो न:।।९।।

अर्थ : **(आमर्ष-सर्वौषधय:)** आमर्षौषधि, सर्वौषधि **(तथा)** और **(आशीर्विषाविष)** आशीर्विषाविष **(दृष्टिविषाविषा:)** दृष्टिविषाविष **(च)** और **(सखिल्ल-विड्-जल्ल-मलौषधीशा:)** क्ष्वेलौषधि, विडौषधि, जल्लौषधि, मलौषधि ऋद्धि-धारक **(परमर्षय:)** महान् ऋषिगण **(न:)** हमारा **(स्वस्ति)** कल्याण **(क्रियासु:)** करें ।

क्षीरं स्रवंतोऽत्र घृतं स्रवंतो, मधुस्रवंतोऽप्यमृतं स्रवंत: ।
अक्षीण-संवास-महानसाश्च,स्वस्ति क्रियासु: परमर्षयो न:।।१०।।

अर्थ : **(अत्र)** यहाँ [मनुष्य-लोक में] **(क्षीरं स्रवंत:)** क्षीरस्रावी **(घृतं स्रवंत:)** घृतस्रावी **(मधुस्रवंत:)** मधुस्रावी **(अमृतं स्रवंत:)** अमृतस्रावी **(च)** और **(अक्षीण-संवास-महानसा:)** अक्षीण-संवास तथा अक्षीण-महानस ऋद्धिधारक **(परमर्षय:)** महान् ऋषिगण **(अपि)** भी **(न:)** हमारा **(स्वस्ति)** कल्याण **(क्रियासु:)** करें ।

।। इति परमर्षिस्वस्तिमंगल-विधानं ।।